पाठ 13

अनदान के परब–छेरछेरा

छत्तीसगढ़ म कतको परब–तिहार हवय। छेरछेरा हमर कृषि–संस्कृति के परब आय। ये पाठ म छेरछेरा परब के बरनन हवय।

छत्तीसगढ़ म छेरछेरा ल पूस महिना के अँजोरी पाख म पुन्नी के दिन परब बरोबर मनाय जाथे। किसान अपन फसल ल मींज–कूट के कोठी–ढाबा म धर लेथें । इन्द्रदेव के किरपा ले जब खूब बरसा होथे त अच्छा फसल घलो होथे, तहाँ उँखर हिरदे झूम उठथे। छत्तीसगढ़ म ये दिन जम्मो लइका–सियान छेरछेरा माँगे बर जाथें अउ गीत गाथें–''छेरिक छेरा, छेर मरकनिन छेर छेरा, माई कोठी के धान ल हेरहेरा।''

दफड़ा, गुदुम अउ मोहरी के धुन म मगन हो के सब नाचथें। जब बिदागरी म देरी होवत देखथें त फेर दूसर गीत गाथें –

'' तारा रे तारा, अंगरेजी तारा, जल्दी–जल्दी बिदा करहू, जाबो दूसर पारा।''

''अरन–बरन कोदो दरन, जभे देबे तभे टरन।''

हमर छत्तीसगढ़ म एक ठन ये रिवाज घलो हवय। किसान मन अपन कोठार–बियारा म धान के मिंजई के आखरी दिन, उहाँ जतका मनखे रहिथें, सब झन ल धान निछावर करथें।

जब किसान के धान के मिंजई छेवर हो जाथे, तभे ये समिलहा छेवर ह ''छेरछेरा पुन्नी'' के परब के रूप म मनाय जाथे।

छेरछेरा परब के एक ठन लोककथा हवय। बहुत समे पहिली बड़हर मन अपन धान–कोदो ल मींज–कूट के कोठी–ढोली म भर लेवँय, अउ बनिहार मन अन्न के दाना बर तरसँय। पोट–पोट भूख मरँय।

अपन कमइया बेटा मन ल भूखे मरत धरती दाई देखे नइ सकिस। वो ह घोर अंकाल पार दिस। धरती बंजर होगे। एक ठन हरियर काँदी नइ जामिस। अन अउ पानी बर हाहाकार मचगे। ये बिपत ले बाँचे बर बड़हर मन धरती दाई के पूजा–पाठ करे लागिन।

सात दिन ले पूजा–पाठ करिन। पूजा–पाठ होइस, तेखर पाछू धरती दाई परगट होगे। सब झन जय–जयकार करिन। त धरती दाई ह बड़हर मन ल कहिस–''सब झन अपन–अपन उपज के

शिक्षण संकेत : लइका मन ले छत्तीसगढ़ के परब–तिहार के संबंध म चर्चा करँय। ओ मन ल बतावँय के जम्मो परब–तिहार बेरा बखत म आथें। परब अउ तिहार के संबंध म लइकामन ले प्रश्न पूछँय अउ उँकर मन से आने परब–तिहार के बारे म सुनय।

ठोमा–खोंची हिस्सा बनिहार ल दान करहू। कोनो ल छोटे अउ कोनो ल बड़े झन समझहू। कोनो गरीब होय, चाहे बड़हर, धान–कोदो के दान लेहू–देहू तभे अंकाल सिराही।''

देबी के बात ल सब झन हाँसी–खुशी ले मान लेइन। तब धरती दाई ह अन, पानी, साग–भाजी कंद–मूल, फल–फूल अउ जरी–बूटी के बरसा कर दिस। लोगन के मन म खुसियाली

छागे। आदिशक्ति माता ह शाकंभरी देवी के रूप म परगट होइस। ये दिन ल शाकंभरी जयंती के रूप म घलो मनाय जाथे।

छेरछेरा के दिन जम्मो मनखे जात–धरम, ऊँच–नीच अउ छोटे–बड़े के भेदभाव ल भुला के अन के दान माँगे बर जाथें। धान–कोदो के दान ल कोनो बर्तन म नइ करे जाय, टुकना, चरिहा नइ त सुपा–टोपली म देथें।

छत्तीसगढ़ म छेरछेरा के दिन हाँसी–खुशी के नंदिया–नरवा बोहाथे। कोनो बड़े न कोनो छोटे। सब झन बरोबर हवँय। आज ले सबो धान–कोदो के दान लेवत हवँय अउ देवत हवँय।

छेरछेरा परब हम सब झन ल जुरमिल के रहना सिखाथे। मिल–बाँट के खाये बर कहिथे। ये ह हमर छत्तीसगढ़ के जम्मो लइका–सियान बर बरोबरी के तिहार आय।

छेरछेरा के दिन धान या रूपया–पैसा के दान करे जाथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द के हिन्दी अर्थ

परब	–	पर्व
अंजोरी पाख	–	शुक्ल पक्ष
पुन्नी	–	पूर्णिमा
हिरदे	–	हृदय
मोहरी	–	शहनाई
बिधुन होना	–	मग्न होना
कोठार	–	खलिहान
निछावर	–	न्यौछावर
छेवर	–	आखिरी/कार्य पूरा होना/कार्य समाप्त या पूर्ण होना
समिलहा	–	सम्मिलित/साँझा
काँदी	–	घास
सिराना	–	खत्म होना/अंत होना
जम्मो	–	सभी
बड़हर	–	धनी

प्रश्न अउ अभ्यास

गुरुजी कक्षा के लइकामन के दू दल बनाके मुँहअँखरा प्रश्न–उत्तर करावँय। कुछु प्रश्न अइसे हो सकत हें–

अ. छेरछेरा परब कोन महिना म मनाय जाथे ?

ब. काखर किरपा ले खूब बरसा होथे ?

प्रश्न 1 खाल्हे लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव।

क. छेरछेरा म कोन–कोन गीत गाय–जाथे ?

ख. काखर धुन म सब बिधुन हो के नाचथें ?

ग. अपन कमइया बेटा मन ल भूख मरत कोन देखे नइ सकिस ?

घ. बड़हर मन फसल ल मींज–कूट के कहाँ धर देवँय?

गतिविधि

गुरुजी लइकामन ल तीन दल म बाँटँय। खाल्हे दे बिन्दु ऊपर दल म चर्चा करावँय।

1. पाँच ठन अन के नाँव बतावव ?
2. खेती हमर बर कतका उपयोगी हवय ?
3. धान के खेती कतका किसम ले करे जाथे ?
4. लइकामन अलग–अलग समूह बना के छेरछेरा नाचे के अभ्यास करँय अउ छेरछेरा के गीत गा के कक्षा म सुनावँय।

भाषा–तत्व अउ व्याकरण

इहाँ हम सीखबो– पर्यायवाची शब्द अउ उल्टा अर्थ वाले शब्द।

प्रश्न 1. ये शब्द मन के पर्यायवाची हिन्दी शब्द लिखव–

महिना, दिन, धरती, बेटा, पानी

प्रश्न 2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले हिन्दी शब्द लिखव–

पुन्नी, जल्दी, जयंती

रचना

एक ठन सुआगीत लिख के ओकर हिन्दी म अर्थ लिखव।

गतिविधि

छत्तीसगढ़ के परब–तिहार के सूची बनावव अउ ऊँखर बारे म अपन गुरुजी ले जानकारी लेवव।

4TK6LE